**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**मो० न० 9546743796**

**Email-** [**mishrasm966@gmail.com**](mailto:mishrasm966@gmail.com)

**B.A. III**

**काव्यक लक्षण**

**आचार्य मम्मट पूर्व परम्परा सँ प्राप्त काव्य तत्व सभक सार कें लए अपन काव्यक लक्षणमे सर्वप्रथम शब्दार्थक विशेषण कें सम्मिलित कएलनि – तद्दोषौ शब्दार्थो सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि | “**

**एहि काव्य लक्षणमे काव्यकें निर्दुष्ट , गुणयुक्त , आ कखनहूँ - कखनहूँ अलंकार रहित शब्दार्थ कहल गेल अछि | एहि लक्षणमे सभ आवश्यक काव्य – तत्वक समाहार कएल गेल अछि | एकर अतिरिक्त एहिमे अपेक्षित संतुलन आ महत्त्वक प्रतिपादन सेहो भेल अछि , मुदा हुनक एहि काव्य – लक्षण पर विश्वनाथ , जयदेव एवं पंडितराज जगन्नाथ अनेक प्रकारक आक्षेप कएलनि –**

**( क ) काव्य सर्वथा निर्दुष्ट नहि भए सकैत अछि |**

**( ख ) सगुनौ पद ‘ शब्दार्थो ‘ क विशेषण नहि होएबाक चाही |**

**( ग ) अलंकार रहित काव्य नहि होइत अछि |**

**( घ ) काव्य शब्दार्थनिष्ठ नहि भए कें मात्र शब्दनिष्ठ अछि |**

**एहि आक्षेप सभकें परवर्ती आचार्य लोकनि मात्र पांडित्य प्रदर्शन कहलनि अछि | नागेशभट्ट पंडितराज द्वारा उठाएल गेल आशंका कें नोचितः कहि कें अस्वीकार कए देलनि अछि | अतएव मम्मटक लक्षण व्यवहारिकताक दृष्टिसं सर्वोत्कृष्ट अछि | हुनका परिभाषामे इहो स्पष्ट अछि जे काव्य मे अलंकारक महत्व अछि , मुदा कखनहूँ – कखनहूँ गुणोत्कृष्टताक कारण ओकर बिना काज चलि सकैत अछि | एहि परिभाषाक वैशिष्ट्यक आधार पर परवर्ती आचार्य लोकनि मम्मटक परिभाषा सं अधिक प्रभाव ग्रहण कएलनि |**

**रसवादी आचार्य विश्वनाथ मम्मटक काव्यक परिभाषाक खण्डन करैत कहैत छथि जे मम्मट काव्यक विषयमे तीन गोट बात कहलनि अछि – अदोषौ सगुनौ आ अलंकृति पुनः क्वापि | ओ ‘ अदोषो ‘ मे व्याप्ति दोष मानैत छथि , किएक त कोनो रचना निर्दुष्ट नहि होइछ , ओहिमे कोनो ने कोनो दोष निकलिए जाएत | ‘ सगुनौ ‘ शब्दमे अतिव्याप्ति दोष अछि | गुण शब्द आ अर्थक धर्म मानल जएबाक संग – संग रसक धर्म सेहो अछि | अतएव एहि मे अति व्याप्ति दोष अछि | एहि रुप सं ‘ अनलंकृति पुनः क्वापि ‘ पर हुनक आक्षेप अछि जे शब्द आ अर्थ शब्दक रूप नहि , अपितु रसउत्कर्ष कारक अछि | एहिसँ काव्यक उत्कृष्टता ज्ञात होइत अछि |**

**तत्पश्चात आचार्य विश्वनाथ कहैत छथि – “ वाक्यं रसात्मकम काव्यम | “ अर्थात रसात्मक वाक्य काव्य थिक | एहि परिभाषा मे रस , रसाभास , रसाभाव , भावोदय , भाव सवलता , भाव – संधि आदिकें ग्रहण कएल गेल अछि |**

**काव्य – लक्षणक दृष्टिसँ ई लक्षण संतुलित एवं संक्षिप्त अछि | मुदा रसात्मक वाक्ये टा काव्य अछि त एहि स्थितिमे रस काव्यक अनिवार्य अंग भए जाइत अछि | मुदा शास्त्रीय दृष्टिसँ जाहि काव्यमे रस**

**सम्पादन भेल हो ओकरा काव्य कहबैक त काव्यक क्षेत्र संकुचित भए जाएत | तखन एहन काव्य कें जाहिमे रस निष्पन्न नहि अछि वा जाहिमे मात्र उक्ति वैचित्य अछि , काव्य नहि कहल जाएत |एहन अवस्थामे विद्यापतिक अनेकों दृष्टिकूट , हिन्दीक बिहारी आ केशवक अनेक काव्यांश काव्यक क्षेत्रमे नहि आएत | एहि हेतु पंडितराज जगन्नाथक कथन छनि जे - “ रमणीयार्थ: प्रतिपादक: शब्द: काव्यम | “ अर्थात रमणीय अर्थक प्रतिपादन करएवला शब्द काव्य अछि | एहि परिभाषाक अभिप्राय ई अछि जे ओ शब्द जे लोकोत्तर अर्थात अलौकिक आनंदक वृद्धि करए – काव्य अछि | एतय आचार्य जगन्नाथ रमणीयार्थ शब्दक व्याख्या करैत कहैत छथि जे जकर ज्ञानसँ लोकोत्तर अर्थात अलौकिक आनंदक प्राप्ति हो – ओ अर्थ रमणीय अछि | मुदा एहि लक्षण पर आपत्ति प्रकट करैत किछु विद्वानक कथन छनि जे शब्दसँ रमणीय अर्थक प्रतिपादन नहि होइत अछि बल्कि रमणीय अर्थक प्रतिपादन वाक्यसँ होइत अछि | एकर अर्थक रमणीयताक अतिरिक्त शब्दक रमणीयता सेहो काव्यमे होइत अछि |**

**काव्यक उपर्युक्त लक्षणसँ ज्ञात होइत अछि जे काव्यक परिभाषाक संदर्भमे सर्वग्राह्य कोनो एक दृष्टिकोण नहि रहल अछि | एकर कारण ई अछि जे परिभाषा सभमे कतहु अर्थक व्याप्ति , अर्थ – संकोच आ कतहु अर्थ विस्तार देखल जाइत अछि | एहि आधार पर देखल गेल अछि जे काव्यक परिभाषा करैत काल दू गोट दृष्टिकोण रहल अछि – एक काव्यक शरीर आ दोसर काव्यक आत्मा | काव्यक शरीरक निरूपण करबाक हेतु किओ शब्द पर बल देलनि त किओ अर्थ पर किओ शब्द एवं अर्थ दुनू पर | एहि रुपसँ काव्यक आत्मा कें सेहो विभिन्न आचार्य विभिन्न प्रकारसँ स्वीकार कएलनि अछि |**

**एहना स्थिति मे पंडितराज जगन्नाथक परिभाषा “ रमणीयार्थ: प्रतिपादक: शब्द: काव्यम | “ मौलिक तथा काव्यक आत्माक अत्यधिक निकट अछि | ई परिभाषा विश्वनाथक सरसताक आरो विकसित स्वरूप व्यक्त करैत अछि | काव्य – लक्षण कें रमणीयताक आधार पर अधिष्ठित कए रस , अलंकार , रीति , ध्वनि आदिक झगड़ा कें शांत कए दी गेल अछि | आह्लाद्कता सैह काव्यक प्राण अछि | रस त काव्यक प्रधान तत्व अछि , मुदा अलंकार , गुण , ध्वनि आदिक अस्तित्व सेहो एही आह्लादक लेल अछि | एकर अतिरिक्त रमणीयताक समावेश सँ जगन्नाथक ई परिभाषा वेश व्यापक भए गेल अछि , किएक त अभिव्यंजना अलंकार शास्त्रक मान्य शैली सभ धरि सीमित नहि रहि सकैत अछि | कवि – प्रतिभा रमणीयता द्वारा स्वच्छन्द आकाश आ वातावरण मे विकसित होइत अछि |**

**पंडितराज जगन्नाथक ‘ रमणीयता ‘ क विशद अर्थसँ ज्ञात होइत अछि जे एकरे दंडी ‘ इन्टार्थ ‘ वामन ‘ सौन्दर्भ ‘ आनंदवर्द्धन एवं कुंतक लोकोत्तर आल्हादक तथा किछु आचार्य चमत्कार कहलनि अछि |**

**एतावता ज्ञात होइत अछि जे पंडितराज जगन्नाथक काव्यक लक्षण मे विभिन्न आचार्य द्वारा देल गेल परिभाषाक सार अंश सभक समावेश भए गेल अछि | इएह परिभाषा सभ परिभाषासँ विशद , अत्यधिक गंभीर , व्यापक एवं उपयुक्त अछि | अतएव हमर मन्तव्य अछि जे विभिन्न काव्य शास्त्री द्वारा देल गेल काव्य – लक्षणमे पंडितराज जगन्नाथक काव्य – लक्षण मौलिक , सर्वोत्कृष्ट आ समीचीन अछि |**